[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3637 E

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : भारतीय काव्यशास्त्र

Name of the Course : B.A. (Hon) Hindi (LOCF)

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का **संक्षिप्त** परिचय देते हुए आचार्य मम्मट के योगदान पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

काव्य हेतु से आप क्या समझते हैं? भारतीय आचार्यों द्वारा विवेचित काव्य हेतुओं पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. रस क्या है? रस के स्वरूप पर विचार कीजिये। (12)

अथवा

व्यंजना शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न प्रकारों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

3. मुक्तक काव्य अथवा नाटक का तात्विक विवेचन कीजिये। (12)

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण-उदाहरण लिखिए - (9)

यमक	श्लेष	वक्रोक्ति
अतिशयोक्ति	व्यतिरिक	उत्प्रेक्षा

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण-उदाहरण लिखिए - (9)

शिखरिणी	शार्दूलविक्रीड़ित	घनाक्षरी
उल्लाला	सोरठा	कुण्डलिया

5. किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) आचार्य भरत मुनि

(ख) करुण रस

(ग) माधुर्य गुण

(घ) काव्य प्रयोजन

(ङ) चम्पू काव्य

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3985 E

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B. A (Hon) Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7.5×2=15)

(क) अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोला : हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया

टाँगे हुए है कई दिनों से

P.T.O.

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

अथवा

यह गीत सुबह का है, गा कर देखें,

यह गीत गजब का है, ढा कर देखे,

यह गीत जरा सूने में लिखा था,

यह गीत वहाँ पूने में लिखा था।

यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है

यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है

यह गीत भूख और प्यास भगाता है

जी, यह मसान में भूख जगाता है,

यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर

यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़ूर ।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (7.5×2=15)

(क) साँप !

तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में बसना

भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूँ- (उत्तर दोगे ?)

तब कैसे सीखा डँसना-

विष कहाँ पाया? (मूल संवेदना)

(ख) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

5. 'धार' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'गीत फ़रोश' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4007 **E**

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (7+8=15)

(क) "मैं तो आपसे बार-बार कह चुका, आप मेरे लिए कुछ ना करें। मुझे धन की जरूरत नहीं। आपकी भी वृद्धावस्था है। शांत-चित्त होकर भगवत-भजन कीजिये। समरकान्त तीखे शब्दों में बोले "धन न रहेगा लाला, तो भीख मँगोगे । यों चैन से बैठकर चरखा ना चलाओगे। यह तो न होगा, मेरी कुछ मदद करो, पुरुषार्थहीन मनुष्यों की तरह कहने लगे, मुझे धन की जरूरत नहीं? कौन है जिसे धन की जरूरत नहीं? साधु-सन्यासी तक तो पैसों पर

प्राण देते हैं। धन बड़े पुरुषार्थ से मिलता है। जिसमें पुरुषार्थ नहीं, वह क्या धन कमाएगा? बड़े-बड़े तो धन की उपेक्षा कर ही नहीं सकते, तुम किस खेत की मूली हो!"

अथवा

"अमि-जोत के सहमे हुए चेहरे और क्षण भर को डॉक्टर के माथे पर खिंच आए बल ....लगा जैसे शकुन से ही कोई भरी अपराध हो गया हो। जरूर ही उस समय उसके चेहरे पर बड़ी कातर-सी बेबसी उभर आई होगी, तभी तो डॉक्टर ने पीठ सहलाकर उसे दिलासा दी, "बच्चों की बात को लेकर तुम इतनी परेशान क्यों हो रही हो? टैंक इट ईजी..." पर खुद वह शायद ईजी नहीं हो पाये थे।

(ब) शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आप को स्वाहा कर देने वाली माँ नहीं थी; बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से तृप्त माँ थी। इस नारी और माँ के आपसी द्वंद का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता था। आज जो लगता है कि कहानी में बिखरी लोक-कथाएँ अनायास ही नहीं आ गई हैं, वे शकुन के जीवन की दो नितांत विरोधी स्थितियाँ, मिथ और वास्तविकता के अंतर्विरोध को उजागर करती है"।

"मनुष्य स्वतंत्र विचारों वाला प्राणी होते हुए भी परिस्थितियों का दास है। और यह परिस्थिति-चक्र क्या है, पूर्वजन्म के कर्मों के फल का विधान है। मनुष्य की विजय वहीं संभव है, जहां वह परिस्थितियों के चक्र में पड़कर उसी के साथ चक्कर न खाए, वरन अपने कर्तव्याकर्तव्य का विचार रखते हुए उस पर विजय पावे"।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें : (7+8=15)

(क) लाला श्रीनिवास दास

(ख) प्रेमचंद

(ग) फणीश्वरनाथ रेणु

(घ) मन्नू भण्डारी

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास के पात्र गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं - इस कथन की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के आधार पर प्रेमचंद की भाषा शैली पर प्रकाश डालें?

4. भारतीय दर्शन वृतियों के दमन पर नहीं शमन पर आधारित है, इस कथन के आलोक में 'चित्रलेखा' उपन्यास की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'चित्रलेखा चरित्र-प्रधान उपन्यास है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में चित्रलेखा का चरित्र-चित्रण कीजिये।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-दृष्टि पर विचार करें। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास में वैवाहिक-संबंधों के बदलते मूल्यों को रेखांकित किया गया है- इस कथन की समीक्षा कीजिये।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3509 **C**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10 + 10 + 10)

P.T.O.

(क) भावों की छानबीन करने पर मंगल का विधान करने वाले दो भाव ठहरते हैं- करुणा और प्रेम। करुणा की गति रक्षा की ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर। लोक में प्रथम साध्य रक्षा है। रंजन का अवसर उसके पीछे आता है। अतः साधनावस्था या प्रयत्न पक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीज भाव करुणा ही ठहरती है। इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित को लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकमात्र रस कह दिया। रामायण का बीज भाव करुणा है, जिसका संकेत क्रौंच को मारने वाले निषाद के प्रति वाल्मीकि के मुँह से निकले वचन द्वारा आरंभ में ही मिलता है।

अथवा

हमें सुंदरता की कसौटी बदलनी होगी। अभी तक यह कसौटी अमीरी और विलासिता के ढंग की थी। हमारा कलाकार अमीरों [illegible] पकड़े रहना चाहता था, उन्हीं की कद्रदानी पर उसका

अस्तित्व अवलंबित था और उन्हीं के सुख-दुःख, आशा-निराशा प्रतियोगिता और प्रतिद्वंद्विता की व्याख्या कला का उद्देश्य था। उसकी निगाह अंतःपुर और बंगलों की ओर उठती थी। झोंपड़े और खंडहर उसके ध्यान के अधिकारी न थे। उन्हें वह मनुष्यता की परिधि से बाहर समझता था। कभी इनकी चर्चा करता भी था, पर इनका मजाक उड़ाने के लिए, ग्रामवासी की देहाती वेश-भूषा और तौर-तरीकों पर हँसने के लिए।

(ख) तुलसी के समय का सामाजिक यथार्थ क्या है? उनके समय का सामाजिक यथार्थ जर्जर होती हुई सामंती व्यवस्था है। तुलसी इस व्यवस्था के रक्षक नहीं हैं और सामंतों के उत्पीड़न के विरुद्ध उनकी सहानुभूति साधारण जनों और स्त्रियों के साथ है। उन्होंने स्वयं इस उत्पीड़न का अनुभव किया था। इसलिए यह धारणा कि तुलसी नारी की पराधीनता के हामी थे, ब्राह्मणों के खिलाफ शूद्रों की बगावत में वह ब्राह्मणों के साथ थे, उनके समूचे साहित्य

के अध्ययन से यह साबित नहीं होती। तुलसी की भक्ति समाज के लिए अफीम नहीं थी। वह जन-साधारण का एक साधन थी। भक्त तुलसीदास मूलतः मानववादी हैं और उनके साहित्य की महत्ता वास्तविक सामाजिक संबंधों का वर्णन करने में है।

अथवा

प्रयोग कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं हैं। न प्रयोग अपने आप में इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता का भी कोई वाद नहीं है; कविता भी अपने आप में इष्ट या साध्य नहीं है। अतः हमें 'प्रयोगवादी' कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें 'कवितावादी' कहना। क्योंकि यह आग्रह तो हमारा है कि जिस प्रकार कविता रूपी माध्यम को बरतते हुए आत्माभिव्यक्ति चाहने वाले कवि को अधिकार है कि उस माध्यम

का अपनी आवश्यकता के अनुरूप श्रेष्ठ उपयोग करे, उसी प्रकार आत्म-सत्य के अन्वेषी कवि को, अन्वेषण के प्रयोग-रूपी माध्यम का उपयोग करते समय उस माध्यम की विशेषताओं को परखने का भी अधिकार है। इतना ही नहीं, बिना माध्यम की विशेषता, उसकी शक्ति और उसकी सीमा को परखे और आत्मसात किए उस माध्यम का श्रेष्ठ उपयोग हो ही नहीं सकता।

(ग) परिष्कृत रुचि, आज की परिस्थिति में, सर्वसामान्य नहीं है। आज रुचि को विकृत करने के साधन अनेक हैं और निरंतर उनका प्रसार ही होता जा रहा है। सस्ती पत्रिकाएं, सामान्य से भी सामान्यतर रुचि के लेखक, 'अपील' का आग्रह। ये सारी चीजें रुचि परिष्कार में बाधक हैं। किंतु इन कुरुचिपूर्ण साधनों के विकास के साथ ही इनके प्रति चेतना का अनुपात भी बढ़ता जा रहा है। आज पाठक अच्छी कहानियों की मांग ज्यादा करता

दिख पड़ता है। वह सस्ते स्तरों की कहानी को या तो ध्यान से बाहर कर देता है या उनके समाजघाती होने पर उनकी कड़ी आलोचना करता है। आज के हिंदी कथा साहित्य के पाठक की रुचि पर संदेह करना एक प्रकार की असावधानी (शायद सायास बरती गई!) कही जाएगी।

अथवा

साहित्य के रूप केवल रूप्य नहीं हैं बल्कि जीवन को समझने के भिन्न-भिन्न माध्यम हैं। एक माध्यम जब चुकता दिखाई पड़ता है, तो दूसरे माध्यम का निर्माण किया जाता है। अपनी महान जययात्रा में सत्य-सौंदर्य-दृष्टा मनुष्य ने इसी तरह समय-समय पर नये नये कलारूपों की सृष्टि की ताकि वह नित्य विकासशील वास्तविकता को अधिक से अधिक समझ और समेट सके । हमारी इसी ऐतिहासिक आवश्यकता से एक समय कहानी भी उत्पन्न हुई और अपने रूप सौंदर्य के द्वारा इसने हमारे

सत्य-सौंदर्य-बोध को भी विकसित किया। कहानी की इसी ऐतिहासिक भूमिका की मांग है कि वर्तमान परिस्थिति में उसकी सार्थकता की परीक्षा व्यापक संदर्भ में की जाय।

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना शैली पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'तुलसी साहित्य में सामंत-विरोधी मूल्य' में अभिव्यक्त रामविलास शर्मा के विचारों का मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

'कला के तीन क्षण' में निहित मुक्तिबोध के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. 'शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट' लेख पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए। (15)

अथवा

'रेणु: समय मानवीय दृष्टि' शीर्षक पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

P 5

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3660 C

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+7=15)

(क) मनुष्य व्यक्ति के चरित्र का विचार कई एक रीति से हो सकता है। और जिस रीति पर आरूढ़ हो इसकी मीमांसा कीजिये उस ढंग से वैसे विचार होंगे। चाहे मनुष्य के धर्म अथवा सच्चरित्र संबंधी गुणों का विचार कीजिए या चाहे इसी के निकट का कोई प्रश्न उठाकर उस पर कुंद शंका समाधान कीजिये अर्थात्

P.T.O.

सच्चरित्र से सामाजिक क्या लाभ है इन सब बातों के विचार से हमको इस लेख में कुछ प्रयोजन नहीं है किन्तु हमको यहाँ उस मुख्य बात से प्रयोजन है जो इस प्रकार की मीमांसा के भी पूर्व विचार में आनी चाहिये और वह यह बात है कि जातियों का अनूठापन इस देश के इतिहास का फल है।

अथवा

अतीत की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण है। अर्थ-परायण लाख कहा करें कि 'गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा' पर हृदय नहीं मानता; बार-बार अतीत की ओर जाया करता है। अपनी यह बुरी आदत नहीं छोड़ता। इसमें कुछ रहस्य अवश्य है। हृदय के लिए अतीत एक मुक्ति लोक है जहाँ वह अनेक प्रकार के बंधनों से छूटा रहता है और अपने शुद्ध रूप में विचरता है। वर्तमान हमें अंधा बनाये रहता है; अतीत बीच-बीच में हमारी आँखें खोलता रहता है।

(ख) भारत वर्ष बहुत बड़ा देश है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। इस इतिहास का जितना अंश जाना जा सकता उसकी अपेक्षा जितना नहीं जाना जा सकता, वह और भी पुराना और महत्वपूर्ण है। न जाने किस अज्ञात काल से नाना जातियाँ आ-आकर इस देश में बसती रही है और इसके साधन को नाना भाव से मोड़ती रही हैं, नये रूप देती रही हैं और समृद्ध करती रही हैं। इस देश का सबसे पुराना उपलब्ध साहित्य आर्यों का है।

अथवा

अनुसरण मनुष्य की प्रकृति है। बालक प्राय: आरम्भ में सब कुछ अनुसरण से ही सीखता है, तत्पश्चात् अपने अनुभव के साँचे में ढालकर उसे अधिक से अधिक पूर्ण करने के प्रयास करता है परन्तु अनुभव के आधार से हीन अनुसरण सिखाए हुए पशु के अन्धानुसरण के समान है जो जीवन के गौरव को समूल नष्ट कर और मनुष्य को दयनीय बनाकर पशु की श्रेणी में बैठने के लिए बाध्य कर देता है।

2. 'मजदूरी' और 'प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अतीत की स्मृति' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'तुम चंदन हम पानी' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'हमारी शृंखला की कड़ियाँ' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'अपनी खबर' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'नए संघर्ष' का सार लिखिए।

5. 'अज्ञेय के साथ' की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

सुभान खाँ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3746 **E**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : Hindi Ki Bhashik Vividhtayen (DSE)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. वाचिक हिन्दी के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

अथवा

आधुनिक साहित्यिक हिंदी की भाषिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित कबीर के पदों में वर्णित रहस्य-भावना पर प्रकाश डालिए। (15)

P.T.O.

अथवा

अमीर खुसरो की मुकरियों की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

3. बनारसीदास की आत्मकथा 'अर्धकथानक' का महत्व लिखिए। (15)

अथवा

गालिब की गजलों का सार लिखिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' की संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'पंचलैट' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हुआ तुझ इश्क सूं ऐ आतिशीं रू दिल मिरा पानी, (8)
कि ज्यूं गलता है आतिश सूं गुलाब आहिस्ता-आहिस्ता
अदा-ओ-नाज सूं आता है वो रौशन जबीं घर सूं,
कि ज्यूं मश्रिक सूं निकले आफताब आहिस्ता-आहिस्ता

अथवा

मेहरबां होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकूं,
जोफ़ में ताना-ए-अग़यार का शिकवा क्या है
बात कुछ सर तो नहीं है कि उठा भी न सकूं
जहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वर्ना
क्या क़सम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूं।

(ख) यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आयी थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नहीं। अब पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है। कीर्तनिया लोग ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है। गांव वालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत है न, भाई रे, गाय लूं? तो दूहे कौन?-----लो मजा ! अब इस कल-कब्जे वाली चीज को कौने बाले।

यह बात नहीं कि गांव भर में कोई पंचलैट बालने वाला नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है।उसके जलानेवाले जानकार हैं। लेकिन सवात्र है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिन्दगी भर ताना कौन सहे।

अथवा

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहां जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पांव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान मैं रहें, जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियां खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूं उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है- जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1330 **F**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kal)

Name of the Course : B.A.(Hons.) Hindi – DSC-5

Semester : II

Duration : 3 Hours
समय : 3 घण्टे

Maximum Marks : 90
पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नवजागरण के आलोक में भारतेंदु युगीन साहित्य का विश्लेषण कीजिए। (18)

अथवा

खड़ी बोली आन्दोलन के संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. हिंदी आलोचना की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिंदी निबंध की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

3. छायावादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। (18)

अथवा

प्रगतिवादी काव्य-रचना के परिवेश का विश्लेषण कीजिए।

4. दलित शब्द की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए दलित चेतना के उदय और विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

समकालीन कथा-साहित्य पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिपण्णी लिखिए :- (9+9=18)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी साहित्य

(ग) संस्मरण

(घ) साठोत्तरी कविता

(ड.) साहित्यिक पत्रकारिता

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3745 **E**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य (DSE) (CORE)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) अइले कलकातावा त खतवा भेजइते ताबर हो तोर ।
रोपेया भेजइत मनीआडर से, गड़यां में होइत सोर ।
रोपेया खोंइछवा में लेइ कर, गुनवां गइती हो तोर ।
दुअरा पर रहित तकेहू नाहीं देखित करिया -गोर ।
सुनरी का लोरवा से चुनरी होखत बा सर हो बोर ।
कहत भिखारी चेत अबहूँ से करत बनी निहोर ।

P.T.O.

अथवा

हमरा के पिया बिसरइहे मति हो।
बहुत दिनन से आसा लागल पिया
आसा निरासा करइहे मति हो।
मन में धीरज धरे छाड़े फिकिर पिया
झूठहूँ के जिया हहरइहे मति हो।
जियरा के मोर तड़पइहे मति हो।
तोहरे सुरतिया में नैना लागल पिया
अंखिया के मोर तरसइहे मति हो।

(ख) माया अपरमपार गुरूजी थांकी माया अपरमपार ।।
अपरम पारहे माया आपकी, झून्टो जगबे वार ।।
देखी माया मन हरसाया, केसे करूँ सतकार ।।
चमत्कार देखि ने चितयो, पोंच्यो हात हजार ।।
हिरदा बीच हुदो उजवाली जागी जोत अपार।
जो मन थो केई दन से मेलो, चड़-चड बिसे बिकार ।।
मल-मल धोय हुवो है उजलो, सतगुरु निमल धार ।।

अथवा

भेद भरी चोपड़ की चाल के, दो राणी समजाय ।।
मन की बात मन में तम राखो, म्हारी समज नी आय ।।
सत्त धरम की चोपड ऊपर, काम क्रोध की गोट ।।
प्रेम से पासा फँको पियाजी, चले चोट पे चोट ।।

तू राणी रंग मेल में राजी, करे रंगीली बात ।।
राज काज को काम पड्योहे, फिकर होए दिन रात ।

(ग) वेद शास्त्र उपनिषेदों का पूर्ण ज्ञान सै,
तप करता इन्द्री बस करके सय्या
गऊ ब्राह्मण साधु को प्यारा करै यज्ञ दान से ।
युध्द करता महारथी तेजस्वी न्यू बलवान सै,
देवता तृप्त रहैं यज्ञ से ज्ञान की परमगति सै ।।1।।

अथवा

सिर पै कलछाया घोर, दिखैं दसूं दिशा कठोर,
ऐश आन्नद की डोरे, हाथ तै छूटी दिखाई दे... ।।1।।
बिस्तर तजकै रूई कैसे पहल, संग मै करण पति की टहल,
वचना मै बन्ध कै गैल हंसणी सी जुटी दिखाई दे... ।।2।।
कित फंसगे कर्म गन्दे मै, लागगी आग भले धन्धे मै,
कलयुग आळे फन्दे मै, घिटी घुटी दिखाई दे.. ।।3।।

(10×3=30)

2. लोकनाट्य परम्परा के सन्दर्भ में 'रामलीला' के उद्‌भव और विकास को रेखांकित कीजिये ।

अथवा

पांडवानी लोकनाट्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परंपरा का उल्लेख कीजिए । (15)

3. 'सांग' लोकनाट्य की विशेषताओं के आधार पर 'नल-दमयंती' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'नल-दमयन्ती' लोकनाट्य के आधार पर नल की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (10)

4. 'बिदेसिया' में वर्णित पलायन की समस्या आज भी प्रासंगिक है' स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मंचन की दृष्टि से 'बिदेसिया' की समीक्षा कीजिए। (10)

5. 'राजयोगी भरथरी' में माच लोकनाट्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (10)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' की रंगमंचीयता को स्पष्ट कीजिए।

9.

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3896 **E**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A. (HONS.) HINDI – DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. शब्द शक्ति को परिभाषित करते हुए लक्षणा शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइए । (12)

अथवा

अलंकार के स्वरूप पर विचार करते हुए उपमा अलंकार को स्पष्ट कीजिए ।

P.T.O.

2. साधारणीकरण के सिद्धांत पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए जादुई यथार्थवाद और यथार्थवाद में अन्तर बताइए। (12)

अथवा

स्वच्छंदतावाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएं बताइए।

4. कहानी की परिभाषा देते हुए उसके तत्वों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

आधुनिकता की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(क) व्यंजना

(ख) रस-निष्पति

(ग) उत्तर संरचनावाद

(घ) विरेचन

(ङ) प्रतीक

(च) नाटक

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper	:	3248
Unique Paper Code	:	62051404
Name of the Paper	:	Hindi-A
Name of the Course	:	**B.A. Prog,.**
Semester	:	IV

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग की व्याख्या कीजिए : (10, 10)

(क) लाहौर से आए हुए मुसलमानों में काफी संख्या ऐसे लोगों की थी, जिन्हें विभाजन के समय मजबूर होकर अमृतसर छोड़कर जाना पड़ा था। साढ़े सात साल में आए अनिवार्य परिवर्तनों को देखकर कहीं उनकी आँखों में हैरानी भर जाती और कहीं अफसोस घिर आता- वल्लाह। कटरा जयमल सिंह इतना चौड़ा कैसे हो गया? क्या इस तरफ के सब के सब मकान जल गए ? ...यहाँ हकीम आसिफ अली की दुकान थी ? अब यहाँ एक मोची ने कब्जा कर रखा है।

अथवा

हारकर उसने मजदूरी करना शुरू कर दिया। जमींदार की नई-हवेली बन रही थी, वह उसी में ईटें ढोने का काम करने लगा। जैसे-जैसे वह सिर पर ईट उठाता, उसके अरमान नीचे को धसकते जाते। मैंने लाख उसे यह काम न करने के लिए कहा, पर वह अपनी माँ - बहन की आड़ लेकर मुझे निरुत्तर कर देता। मुझे उस पर कम क्रोध नहीं था। फिर भी मुझे भरोसा था, क्योंकि बड़ी-बड़ी प्रतिभाओं और गुणों को मैंने उसकी घुट्टी में पिला दिया था। हर परिस्थिति में वे अपना रंग दिखलाएँगे। यह सोचकर ही मैंने उसे उसके भाग्य पर छोड़ दिया और तटस्थ दर्णक की भाँति उसकी प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण करने लगी।

P.T.O.

2

(ख) कहते है, दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है, केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती । सारा ससार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है।

अथवा

''वह समस्या तो कब की हल हो गई। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाई। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्णीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवयसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गए ही नहीं । इन्होंने बहुत जल्द नरक में कई इमारतें तान दी हैं।

2. हिंदी गद्य के उद्भव के कारणों पर संक्षेप में एक लेख लिखिए ।

अथवा

स्वातंत्र्योत्तर नाटक के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए. (12)

3. 'मलबे का मालिक' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

अथवा

'जुलूस' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

4. 'अशोक के फूल' निबंध के आधार पर अशोक के वृक्ष की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का सार लिखिए। (12)

5. 'अंधेर नगरी' नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'चीडों पर चांदनी'' यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने प्राकृतिक सुषमा का वर्णन किया है-इस कथन की समीक्षा कीजिए । (12)

6. एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) प्रेमचंदयुगीन कहानी

(ख) यात्रा वृत्तांत

P 13

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3249 **E**

Unique Paper Code : 62051412

Name of the Paper : Hindi Language and Literature

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi-B-CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

   इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **All** questions are compulsory.

   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कहानी के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

P.T.O.

संस्मरण के विकासक्रम का सामान्य परिचय दीजिए। (12)

2. 'चीफ की दावत' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'बूढ़ी काकी' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

3. धर्मवीर भारती कृत 'ठेले पर हिमालय' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध में वर्णित व्यंग्य की विवेचना कीजिए। (12)

4. 'बिबिया' में चित्रित स्त्री समस्या पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रहसन और व्यंग्य की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए। (12)

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए : - (10 + 10)

(क) रात के ग्यारह बज चुके थे। रूपा आँगन में पड़ी सो रही थी। लाड़ली की आँखों में नींद न आती थी। काकी को पूरियाँ खिलाने

की खुशी उसे सोने न देती थी। उसने गुड़ियों की पिटारी सामने ही रखी थी। जब उसे विश्वास हो गया कि अम्मा सो रही है, तो वह चुपके से उठी और विचारने लगी - कैसे चलूँ? चारों और अंधेरा था। केवल चूल्हों में आग चमक रही थी और चूल्हों के पास एक कुत्ता लेटा हुआ था।

अथवा

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहना सिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान भी न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजीमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ चलेंगे । सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था।

(ख) आज से पचास साल पहले रेल कहाँ थी। मैंने मारवाड़ से मिरजापुर तक और मिरजापुर से रानीगंज तक कितने ही फेरे किए हैं। महीनों तुम्हारे पिता के पिता तथा उनके भी पिताओं का घर - बार मेरी ही पीठ पर रहता था। जिन स्त्रियों ने तुम्हारे बाप और बाप के भी बाप को जना है वह सदा मेरी पीठ को ही पालकी समझती थीं। मारवाड़ में मैं सदा तुम्हारे द्वार पर हाजिर रहता था, पर यहाँ वह मौका कहाँ?

अथवा

कोकिल बायस एक सम, पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक।।
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय।।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) शुक्लयुगीन निबंध

(ख) भारतेन्दु युग और नाटक विधा

(ग) प्रेमचन्द युगीन कहानी

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3250 **E**

Unique Paper Code : 62051413

Name of the Paper : हिंदी गद्य का उद्भव और विकास, हिंदी 'ग'

Name of the Course : **BA (P) HINDI CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. किन्हीं **दो** गद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) नौकर रखना कई कारण से बहुत जरुरी हो गया था। मेरे सभी भाई और रिश्तेदार अच्छे ओहदों पर थे और उन सभी के यहां नौकर थे। मैं जब बहन की शादी में घर गया तो वहां नौकरों का सुख देखा। मेरी दोनों भाभियां रानी की तरह बैठकर

P.T.O.

चारपाइयां तोड़ती थीं, जबकि निर्मला को सवेरे से लेकर रात तक खटना पड़ता था। मैं ईर्ष्या से जल गया। इसके बाद नौकरी पर वापस आया तो निर्मला दोनों जून 'नौकर चाकर' की माला जपने लगी। उसकी तरह अभागिन और दुखिया स्त्री और भी कोई इस दुनिया में होगी?

(ख) सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गंभीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी, या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वे कभी चंचल नहीं होते। रामायण में वाल्मीकि जी ने कुंभकरण की गाढ़ी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरों की नींद आसानी से नहीं खुलती। वे सत्वगुण के क्षीर-समुद्र में ऐसे डूबे रहते हैं कि उनको दुनिया की खबर ही नहीं होती। वे संसार के सच्चे परोपकारी होते हैं।

(ग) विज्ञान धीरे-धीरे इस ओर कदम बढ़ा भी रहा है। कम से कम इतना तो वह तुरंत कर ही देगा कि गेहूं इतना पैदा हो कि जीवन की अन्य परमावश्यक वस्तुएँ - हवा पानी की तरह इफरात हो जायें। बीज, खाद, सिंचाई, जुताई के ऐसे तरीके और किस्म, आदि तो निकलते ही जा रहे हैं, जो गेहूं की समस्या को हल कर दें। प्रचुरता-शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले साधनों की प्रचुरता की ओर आज का मानव प्रवाहित हो रहा है।

(घ) उसने दोनों हाथों से कानों को दबा लिया। वह तेजी से सिर को घुमाने लगा। उसे लग रहा था, जैसे वह संज्ञा खोता जा रहा है। उसके सामने न नहर है, न पानी। बस, उसके पिता की मूर्ति है। इतनी विशाल कि उसने धरती और आसमान सबको ढक रखा है। उसके नेत्रों में स्वर्णिम भविष्य झांक रहा है। उसके एक हाथ में फावड़ा है, दूसरे में अन्न। उसके शरीर से शुभ्र श्वेत जल झर रहा है और उसी से नहर भरती आ रही है, भरती आ रही है....

2. (क) हिंदी कहानी की विकास यात्रा को संक्षेप में बताइये। (12)

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ख) 'दो बैलों की कथा' कहानी का सार लिखिए। (12)

अथवा

'बहादुर' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

(ग) बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित निबन्ध 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'सच्ची वीरता' में निबंधकार का संदेश बताइए।

(घ) घीसा का चरित्र आपको कैसा लगा? लिखिए। (12)

अथवा

'गंगा स्नान करने चलोगे' संस्मरण का सार प्रस्तुत कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) प्रेमचन्दयुगीन कहानी

(ख) भारतेन्दु युगीन निबन्ध

(ग) संस्मरण की विशेषताएँ

P 15

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1524 **F**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik-kal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10×3=30)

(क) कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि
मन न फिरावै आपणा, कहा फिरावै मोहि।
कबीर केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूंडे सौ बार
मन को काहे न मुंडिये, जामैं बिषै विकार।

P.T.O.

अथवा

एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास
एक राम-घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
तुलसी अपनो आचरन, भलो न लागत कासु
तेहि न बासत जो खात, नित लहसुन को बासु।

(ख) जगतु जनायी जिहि सकलू, सो हरि जान्यो नाँह।
ज्यौं आँखिनु सबु देखियै, आँखि न देखी जाँहि।
जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि
आँखिनु आँखि लगि रहै, आँखें लागति नाहि।

अथवा

यों तो सभी का बीतता है बाल्यकाल विनोद में,
वे किन्तु सोते-जागते रहते सदा हैं गोद में।
इस भांति पल कर प्यार में जब वे सपूत बड़े हुए,
उत्पात उनके साथ ही घर में अनेक खड़ें हुए।

(ग) जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था

वह डूब गया तो डूब गया

अम्बर के आनन को देखो

कितने इसके तारे टूटे

कितने इसके प्यारे छूटे

जो छूट गए फिर कहाँ मिले

पर बोलो टूटे तारों पर

कब अम्बर शोक मनाता है

जो बीत गई सो बात गई

अथवा

जी हाँ हुजुर, मैं गीत बेचता हूँ,

मै तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,

यह गीत सुबह का है, गाकर देखें,

यह गीत गजब का है, ढाकर देखे,

यह गीत जरा सूने में लिक्खा था,

यह गीत वहाँ पूने में लिक्खा था,

यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,

यह गीत बढ़ाए से बढ़ जाता है।

2. कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

तुलसीदास की भाषा-संरचना की विवेचना कीजिए।

3. बिहारी के दोहे 'गागर में सागर' हैं- इस कथन को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

जयशंकर प्रसाद के साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. "हरिवंश राय बच्चन" कृत 'जो बीत गई सो बात गई' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'गीत-फरोश' कविता में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

5. किन्ही **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (8,7)

(क) सूरदास का बाल-मनोविज्ञान

(ख) "उनको प्रणाम" कविता की मूल संवेदना

(ग) मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय

(घ) 'बीती बिभावरी जाग री' कविता का सार

P 16

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1302 **F**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी.ए. (विशेष) हिंदी**

Semester / Type : II / DSC

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (3×9=27)

(क) त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना।।

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी।।
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा।।

P.T.O.

अथवा

एकै कहै अमल कमल मुख सीताजू को,

एकै कहै चंदसम आनँद को कंद री।

होइ जी कमल तौ रयनि में न सकुचै री,

चंद जौ तौ बासर न होइ दुति मंद री।

बासर ही कमल रजनि ही में चंद,

मुख बासर हू रजनि बिराजै जगवंद री।

देखे मुख भावै अनदेखई कमल चंद,

तातें मुख मुखै सखी कमलै न चंद री।

(ख) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।

तब ये लता लागति अति सीतल, अब भई ज्वाल की पुंजै।।

बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।

पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजै।

ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजै।

सूरदास प्रभु को मग जोवत आँखियाँ भई बरन ज्यों ज्यों गुंजै

अथवा

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ ।

जा तन की झाँई परै स्यामु हरित - दुति होई ।।

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर ।

भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर ।।

(ग) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै ।

त्यों इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन निहारियै ।

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच औ सोच सहारियै ।

रोकी रहै न, दहैं घनआनंद बावरी रीझ की हाथनि हारियै ।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर, बाडव सुअंभ पर । रावन सदंभ पर रघुकुलराज है ।

पौन बरिबाह पर, संभु रतिनाह पर ज्यौं सहस्त्रबाह पर, राम द्विजराज है ।।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषण बितुंड पर, जैसे मृगराज है ।

तेजतम अंस पर कान्ह जिम कंस पर त्यों मलेच्छ बंस पर, शेर सिवराज है ।

2. तुलसीदास की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

केशव की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

3. सूरदास के "भ्रमरगीत सार" का अपने शब्दों में विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

मुक्तक काव्य की दृष्टि से बिहारी के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

4. घनानंद की शृंगारिक भावना का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

"भूषण का काव्य राष्ट्रीय-सांस्कृतिक एकता को प्रकट करता है" इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

5. टिप्पणी लिखिए **(किन्हीं दो पर)** (2×9=18)

(i) तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की भावना

(ii) सूरदास की काव्य भाषा

(iii) केशव का आचार्यत्व

(iv) बिहारी की सौंदर्य चेतना

(v) रीतिमुक्त कवि घनानंद

(vi) वीर काव्य परंपरा और भूषण

P 17

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1353 **F**

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए **निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल-स्थित संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गठा जा सकता है; न वेद

P.T.O.

की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से; जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से, सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

अथवा

दूसरों के, विशेषतया अपने परिचितों के, थोड़े क्लेश या शोक पर जो वेगरहित दुःख होता है, उसे सहानुभूति कहते हैं। शिष्टाचार में इस शब्द का प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि यह निकम्मा सा हो गया है। अब प्रायः इस शब्द से हृदय का कोई सच्चा भाव नहीं। सहानुभूति के तार, सहानुभूति की चिट्ठियाँ लोग यों ही भेजा करते हैं। यह छद्म शिष्टता मनुष्य के व्यवहार क्षेत्र से सच्चाई के अंश को क्रमशः चरती जा रही है।

(ख) साधु ने समझाया, "महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की अकल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, इन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएं? मैं कई वर्षों से इसी के चिंतन में लगा हूं।"

अथवा

जैसे अपने जड़ तन से निकल कर तदात्म मन कहीं घोर निभृत में विभोर हो रहा हो, चेहरे पर तनाव नहीं, रम्य रेखाओं में सलवटें नहीं, असंभव की संभावनाओं से उदासीन, आत्मानुशासित दृष्टि का सृष्टि चेतन प्रसार। मैं छेड़ता न था कि उस एकात्म चौतन्य चंद्र पर बादल न रुके, कुमुद न कुम्हलाए, तनिक कंकड़ी के पड़े स्वस्थ जल घायल न हो।

2. "जातियों का अनूठापन" निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"आचरण की सभ्यता" निबंध का मूल सन्देश लिखिए।

3. "करुणा" निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने "भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या" निबंध में किन-किन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है?

4. "निराला की साहित्य साधना-नए संघर्ष" के आधार पर निराला की साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

"सदाचार का ताबीज" की भाषा-शैली पर चर्चा कीजिए।

5. संस्मरण की विशेषताओं के आधार पर "अज्ञेय के साथ" संस्मरण की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा" यात्रा- वृतांत का सार लिखिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (10)

(क) राहुल सांकृत्यायन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(ख) "करुणा" निबंध का प्रतिपाद्य